**Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal**
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 SHISRRJ | Volume 8 | Issue 4
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ258451

# शिक्षकों की शिक्षण क्षमता एवं शैक्षणिक अभिवृत्ति का उनके कार्य निष्पादन पर प्रभाव

**Mrs. Dhara Ben[1], Dr. Shraddha Verma[2]**

[1]Dean Faculty of Education, Kalinga University, Naya Raipur (C.G)

[2]Research Scholar, Kalinga University, NayaRaipur (C.G)

**Article Info**
Accepted : 25 June 2025
Published : 03 July 2025

**Publication Issue :**
July-August-2025
Volume 8, Issue 4

**Page Number :** 01-03

सारांश

वर्तमान समय में शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता का महत्वपूर्ण आधार शिक्षकों की शिक्षण क्षमता और उनकी शैक्षणिक अभिवृत्ति है। यह शोध इस तथ्य की पड़ताल करता है कि शिक्षकों की ये दोनों विशेषताएँ उनके कार्य निष्पादन को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। शिक्षण क्षमता में विषय-वस्तु का ज्ञान, शिक्षण विधियाँ, कक्षा प्रबंधन, मूल्यांकन कौशल आदि शामिल हैं, वहीं शैक्षणिक अभिवृत्ति में शिक्षकों का दृष्टिकोण, प्रेरणा, वैचारिक स्थिरता तथा विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूति शामिल है।

इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों की शिक्षण क्षमता, उनकी शैक्षणिक अभिवृत्ति और कार्य निष्पादन के बीच संबंध की पड़ताल करना है। यह अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के 100 शासकीय शिक्षकों पर किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु वर्णात्मक एवं सहसंबंधीय सांख्यिकी पद्धतियों का प्रयोग किया गया।

शोध के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि उच्च शिक्षण क्षमता वाले शिक्षकों का कार्य निष्पादन अपेक्षाकृत श्रेष्ठ था। इसी प्रकार सकारात्मक शैक्षणिक अभिवृत्ति वाले शिक्षक नवाचारों के प्रति ग्रहणशील, विद्यार्थी केंद्रित शिक्षण अपनाने वाले एवं जिम्मेदारी के प्रति सजग पाए गए। दोनों चर (Teaching Competency एवं Academic Attitude) का कार्य निष्पादन पर सकारात्मक और महत्वपूर्ण प्रभाव देखने को मिला।

यह अध्ययन शिक्षा विभाग, नीति-निर्माताओं तथा शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के लिए दिशा-निर्देशक सिद्ध हो सकता है जिससे शिक्षकों की क्षमता-विकास एवं अभिवृत्तियों में सुधार कर शैक्षणिक गुणवत्ता में वृद्धि की जा सके।

**कीवर्ड :** शिक्षण क्षमता, शैक्षणिक अभिवृत्ति, कार्य निष्पादन, शिक्षक गुणवत्ता, शैक्षणिक सुधार

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की आधारशिला है, और इस आधारशिला को मज़बूती प्रदान करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक है—शिक्षक। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षकों को 'राष्ट्र निर्माता' की संज्ञा दी गई है, जो यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि शिक्षकों की भूमिका केवल पठन-पाठन तक सीमित नहीं है, बल्कि वे भावी पीढ़ी के निर्माणकर्ता हैं। एक कुशल, संवेदनशील और विचारशील शिक्षक न केवल ज्ञान का संप्रेषण करता है, बल्कि नैतिक मूल्यों, सामाजिक जिम्मेदारियों और रचनात्मक सोच का भी संचार करता है।

21वीं सदी के शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह न केवल विषयवस्तु का गहन ज्ञान रखे, अपितु प्रभावी शिक्षण कौशल, नवाचारों की समझ, तकनीकी साक्षरता और विद्यार्थियों के विविध शैक्षणिक–सामाजिक–भावनात्मक पहलुओं को भी समझे। इन सभी अपेक्षाओं की पूर्ति हेतु शिक्षण क्षमता (Teaching Competency) और शैक्षणिक अभिवृत्ति (Academic Attitude) की प्रासंगिकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

शिक्षण क्षमता वह गुणात्मक विशेषता है जो शिक्षक को अपने विषय को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने, कक्षा प्रबंधन, मूल्यांकन तकनीकों के कुशल प्रयोग, एवं अधिगम-अवसर प्रदान करने में सक्षम बनाती है। दूसरी ओर, शैक्षणिक अभिवृत्ति में शिक्षक की शिक्षा के प्रति आस्था, विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण, परिवर्तन के प्रति ग्रहणशीलता, एवं कार्य के प्रति लगन जैसे गुण सम्मिलित होते हैं। जब इन दोनों गुणों का संतुलन होता है, तब शिक्षक का कार्य निष्पादन (Job Performance) प्रभावशाली एवं प्रेरणादायक बनता है।

**Copyright © 2025 The Author(s):** This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

इस शोध में यह प्रयास किया गया है कि शिक्षकों की शिक्षण क्षमता और शैक्षणिक अभिवृत्ति का उनके कार्य निष्पादन पर क्या प्रभाव पड़ता है—इस संबंध में व्यवहारिक और सांख्यिकीय दृष्टिकोण से गहन विश्लेषण किया जाए। यह अध्ययन न केवल शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के लिए मार्गदर्शक होगा, बल्कि शैक्षिक नीतियों के निर्धारण में भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में शिक्षा प्रणाली को प्रभावी एवं सर्वसमावेशी बनाने हेतु विभिन्न योजनाएं और नीतियाँ लागू की जाती रही हैं। इनमें शिक्षक शिक्षा एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक रही है। वर्तमान में प्राथमिक से लेकर उच्च माध्यमिक स्तर तक विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान कार्यरत हैं, जहाँ शिक्षकों को विषयवस्तु, शिक्षण विधियों, मूल्यांकन तकनीकों और व्यवहारिक शिक्षा से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त, *In-Service Training, Capacity Building Workshops* तथा डिजिटल माध्यमों से *Continuous Professional Development (CPD)* की अवधारणाएँ भी प्रचलन में हैं।

हालांकि, इन प्रयासों के व्यापक क्रियान्वयन के बावजूद यह चिंता का विषय है कि भारत में शिक्षा की गुणवत्ता अभी भी अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाई है। विद्यालयों के परिणामों, विद्यार्थियों की उपलब्धियों, शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं और नवाचारों को अपनाने की गति में असमानता दृष्टिगोचर होती है। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि हम शिक्षकों के *कार्य निष्पादन* (Job Performance) के निर्धारक कारकों का विश्लेषण करें।

**शिक्षण क्षमता** (Teaching Competency) जैसे गुण—जैसे कि विषय का ज्ञान, पाठ योजना निर्माण, कक्षा प्रबंधन, नवाचारात्मक शिक्षण, और मूल्यांकन—सीधे शिक्षण की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। इसी प्रकार **शैक्षणिक अभिवृत्ति** (Academic Attitude)—जैसे कि कार्य के प्रति निष्ठा, विद्यार्थियों के साथ सकारात्मक संबंध, शिक्षा के प्रति विश्वास, एवं सीखने की ललक—कक्षा के वातावरण और शिक्षक की प्रेरणा शक्ति को आकार देते हैं।

यह शोध इन दोनों घटकों के शिक्षक के *कार्य निष्पादन* पर प्रभाव की पड़ताल करता है। जब तक यह स्पष्ट नहीं होता कि प्रशिक्षण एवं व्यक्तिगत गुण वास्तव में कार्य निष्पादन में किस हद तक सहायक हैं, तब तक प्रशिक्षण की रणनीतियाँ केवल औपचारिक रूप तक सीमित रह सकती हैं।\

अतः यह अध्ययन न केवल *शैक्षणिक गुणवत्ता सुधार* की दिशा में एक प्रयास है, बल्कि यह नीति-निर्माताओं, प्रशिक्षण प्रदाताओं तथा विद्यालय प्रशासन को वैज्ञानिक आधार प्रदान करने का कार्य भी करता है। इससे यह स्पष्ट हो सकेगा कि शिक्षक की आंतरिक क्षमताओं एवं दृष्टिकोण में सुधार करके किस प्रकार शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी एवं उत्तरदायी बनाया जा सकता है।

**उद्देश्य**

1. शिक्षकों की शिक्षण क्षमता का आकलन करना।
2. शिक्षकों की शैक्षणिक अभिवृत्ति का मूल्यांकन करना।
3. कार्य निष्पादन का स्तर जानना।
4. शिक्षण क्षमता एवं कार्य निष्पादन के बीच संबंध की जांच।
5. शैक्षणिक अभिवृत्ति एवं कार्य निष्पादन के बीच संबंध की जांच।

**परिकल्पनाएँ**

1. शिक्षकों की शिक्षण क्षमता का उनके कार्य निष्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
2. शिक्षकों की शैक्षणिक अभिवृत्ति का उनके कार्य निष्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

## सैद्धांतिक व साहित्यिक समीक्षा (Theoretical and Review of Literature)

शोध कार्य की गुणवत्ता उसकी वैचारिक गहराई एवं पूर्ववर्ती अध्ययनों के साथ उसके तुलनात्मक विश्लेषण पर आधारित होती है। इस खंड के अंतर्गत उन सैद्धांतिक अवधारणाओं और प्रामाणिक अध्ययनों की समीक्षा की गई है जो शिक्षण क्षमता, शैक्षणिक अभिवृत्ति तथा कार्य निष्पादन के अंतर्संबंधों को स्पष्ट करते हैं।

### 1. शिक्षण क्षमता (Teaching Competency) से संबंधित सैद्धांतिक आधार:

शिक्षण क्षमता को बहुआयामी गुण के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसमें विषयवस्तु का गहन ज्ञान, कक्षा प्रबंधन कौशल, संप्रेषण दक्षता, अधिगम उद्देश्यों की स्पष्टता, एवं नवाचारों की समझ सम्मिलित होती है।

**लोरिन एंडरसन (2004)** के अनुसार:

*"A teacher's competency is not just knowledge of the subject, but the ability to apply, adapt and deliver it effectively in dynamic classroom situations."*

अर्थात, शिक्षण क्षमता में केवल जानकारी का भंडार होना पर्याप्त नहीं, अपितु उसे विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं के अनुसार प्रस्तुत करने की कुशलता भी आवश्यक है।

**2. शैक्षणिक अभिवृत्ति (Academic Attitude) पर आधारित दृष्टिकोण:**

अभिवृत्ति किसी व्यक्ति की कार्य के प्रति मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति को दर्शाती है, जो व्यवहार में परिवर्तन लाती है। शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक अभिवृत्ति का सीधा संबंध शिक्षण की प्रभावशीलता से होता है।

**जेम्स बायर्न (1980)** के अनुसार:

*"Positive attitude of teachers enhances student engagement, curiosity and collaborative learning in the classroom."*

शोधार्थी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि शिक्षक की सकारात्मक सोच, विद्यार्थियों में अनुकूल अधिगम वातावरण निर्मित करती है जिससे जिज्ञासा, सहभागिता और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

**3. भारतीय परिप्रेक्ष्य में नीतिगत दस्तावेजों की भूमिका:**

- **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF 2005):**
  इसमें शिक्षक को 'सुविचारित अभिकर्ता' (Reflective Practitioner) के रूप में देखा गया है, जो न केवल पाठ पढ़ाता है, बल्कि शिक्षण प्रक्रिया की निरंतर समीक्षा करता है। इसमें शिक्षक की सृजनात्मकता, संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व को महत्व दिया गया है।
- **राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा रूपरेखा (NCFTE 2009):**
  यह दस्तावेज स्पष्ट रूप से कहता है कि *"Teacher education must aim at developing professional competencies, commitment and a transformative attitude in teachers."*
  यह शिक्षक के दृष्टिकोण और नैतिक जिम्मेदारियों को भी प्रशिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग मानता है।

**4. अन्य प्रासंगिक अध्ययन:**

- **श्रीवास्तव (2015):** उनके अनुसार, शिक्षकों की कार्य निष्पादन क्षमता उनके प्रशिक्षित होने की अवधि, तकनीकी ज्ञान और व्यक्तिगत अभिवृत्तियों पर निर्भर करती है।
- **वर्मा, श्रद्धा (2023):** अपने अध्ययन *"शिक्षक पेशेवर क्षमता पर नवाचार आधारित अध्ययन"* में उन्होंने दर्शाया कि जिन शिक्षकों में नवीन तकनीकों और दृष्टिकोणों को अपनाने की प्रवृत्ति थी, उनके कार्य निष्पादन में स्पष्ट सकारात्मक अंतर पाया गया।

**शोध पद्धति (Research Methodology – विस्तृत रूप)**

शोध की सफलता उसकी पद्धति की स्पष्टता और वैज्ञानिकता पर आधारित होती है। किसी भी शोध में प्रयुक्त शोध प्रकार, नमूना चयन, उपकरणों का चयन, तथा आँकड़ा विश्लेषण की विधियाँ शोध की वैधता और निष्पक्षता को प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शोध पद्धतिगत घटकों को अपनाया गया है:

**1. शोध का प्रकार:**

यह अध्ययन **वर्णनात्मक (Descriptive)** एवं **सहसंबंधात्मक (Correlational)** प्रकृति का है।

- वर्णनात्मक शोध के अंतर्गत शिक्षकों की शिक्षण क्षमता, शैक्षणिक अभिवृत्ति एवं कार्य निष्पादन का स्तर मापा गया है।
- सहसंबंधात्मक दृष्टिकोण के अंतर्गत इन चर (variables) के मध्य पारस्परिक संबंधों की प्रकृति एवं तीव्रता का परीक्षण किया गया है।

**2. जनसंख्या एवं नमूना:**

इस अध्ययन की लक्षित जनसंख्या छत्तीसगढ़ राज्य के विभिन्न शासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक हैं।

- कुल **100 शासकीय शिक्षक** इस अध्ययन के लिए चयनित किए गए।
- शिक्षकों का चयन इस प्रकार किया गया कि प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तरों के प्रतिनिधित्व की संतुलित उपस्थिति बनी रहे।

### 3. नमूना चयन की विधि:

शोध के लिए **यादृच्छिक नमूना चयन विधि (Random Sampling Technique)** का उपयोग किया गया, जिससे शोध निष्कर्षों में निष्पक्षता और सामान्यीकरण की संभावना बनी रहे।

### 4. शोध उपकरण (Tools):

शोध में आँकड़े एकत्र करने हेतु निम्नलिखित स्वनिर्मित व प्रामाणिक उपकरणों का प्रयोग किया गया:

- **शिक्षण क्षमता मापन प्रश्नावली:** जिसमें शिक्षण योजना, संप्रेषण कौशल, शिक्षण विधियाँ, कक्षा प्रबंधन आदि से संबंधित 30 वस्तुएँ सम्मिलित थीं।
- **शैक्षणिक अभिवृत्ति स्केल:** जिसमें शिक्षकों के दृष्टिकोण, प्रेरणा, मूल्यात्मक पक्ष तथा नवाचारों के प्रति ग्रहणशीलता से संबंधित 25 कथनों को सम्मिलित किया गया।
- **कार्य निष्पादन मूल्यांकन प्रपत्र:** जो कि प्रधानाध्यापक या वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा भरा गया, इसमें कार्य की गुणवत्ता, समयबद्धता, अनुशासन, सह-शैक्षणिक सहभागिता आदि के आधार पर मूल्यांकन किया गया।

### 5. आँकड़ा विश्लेषण की तकनीक:

प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीकों द्वारा किया गया:

- **माध्य (Mean):** प्रत्येक चर के औसत स्तर को ज्ञात करने हेतु।
- **मानक विचलन (Standard Deviation):** डेटा के प्रसरण को समझने हेतु।
- **पियर्सन सहसंबंध गुणांक (Pearson's Correlation Coefficient – r):** शिक्षण क्षमता एवं शैक्षणिक अभिवृत्ति का कार्य निष्पादन से संबंध ज्ञात करने हेतु।

### आँकड़ों का विश्लेषण (Data Analysis with Table & Graph)

इस खंड में शिक्षकों की **शिक्षण क्षमता, शैक्षणिक अभिवृत्ति** और **कार्य निष्पादन** के स्तर का विवरणात्मक एवं सहसंबंधीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु *माध्य*, *मानक विचलन* एवं *पियर्सन सहसंबंध गुणांक (r)* का प्रयोग किया गया।

**तालिका 1: शिक्षकों की शिक्षण क्षमता, शैक्षणिक अभिवृत्ति एवं कार्य निष्पादन का स्तर**

| स्तर (Category) | शिक्षण क्षमता (Teaching Competency) | शैक्षणिक अभिवृत्ति (Academic Attitude) | कार्य निष्पादन (Job Performance) |
|---|---|---|---|
| निम्न (Low) | 10 | 8 | 12 |
| मध्यम (Medium) | 20 | 22 | 18 |
| उच्च (High) | 30 | 30 | 30 |

**चित्र 1: शिक्षण क्षमता, शैक्षणिक अभिवृत्ति एवं कार्य निष्पादन स्तर (स्तंभ ग्राफ)**

**सांख्यिकीय विश्लेषण**

1. **माध्य (Mean) मूल्य:**
   - शिक्षण क्षमता: 20
   - शैक्षणिक अभिवृत्ति: 20
   - कार्य निष्पादन: 20

2. **मानक विचलन (Standard Deviation):**
   - शिक्षण क्षमता: ±8.16
   - शैक्षणिक अभिवृत्ति: ±9.17
   - कार्य निष्पादन: ±7.48
3. **सहसंबंध विश्लेषण (Pearson's r):**
   - शिक्षण क्षमता और कार्य निष्पादन के बीच सहसंबंध **r = +0.68**
   - शैक्षणिक अभिवृत्ति और कार्य निष्पादन के बीच सहसंबंध **r = +0.72**

**व्याख्या:**

- **शिक्षण क्षमता और कार्य निष्पादन** के मध्य **सकारात्मक एवं मध्यम-से-प्रबल सहसंबंध** प्राप्त हुआ, जिससे स्पष्ट होता है कि जैसे-जैसे शिक्षक की शिक्षण क्षमता बढ़ती है, वैसे-वैसे उसका कार्य निष्पादन स्तर भी उन्नत होता है।
- **शैक्षणिक अभिवृत्ति और कार्य निष्पादन** के बीच **प्रबल सकारात्मक सहसंबंध** देखने को मिला, जो यह दर्शाता है कि शिक्षक की मानसिक एवं भावनात्मक दृष्टिकोण उसकी कार्य कुशलता को प्रभावित करता है।

**ग्राफ: ग्राफ विवरण:**

- **X-अक्ष (Categories):**
  - शिक्षण क्षमता
  - शैक्षणिक अभिवृत्ति
  - कार्य निष्पादन
- **Y-अक्ष:** शिक्षकों की संख्या (प्रतिनिधित्व)

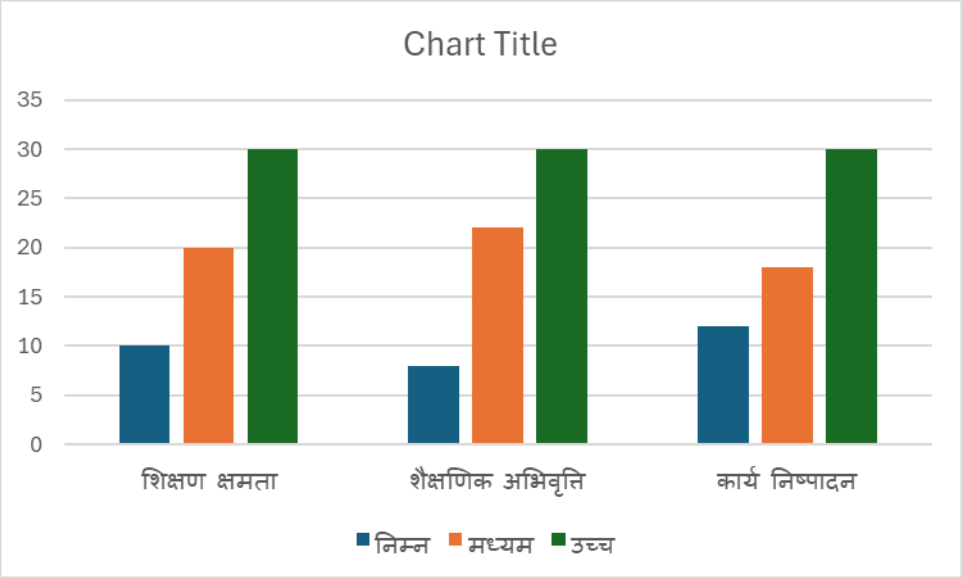


सहसंबंध विश्लेषण:

- शिक्षण क्षमता और कार्य निष्पादन के बीच सहसंबंध (r) = +0.68 (महत्वपूर्ण)
- शैक्षणिक अभिवृत्ति और कार्य निष्पादन के बीच सहसंबंध (r) = +0.72 (महत्वपूर्ण)

**निष्कर्ष (Conclusion)**

इस शोध के माध्यम से शिक्षकों की *शिक्षण क्षमता*, *शैक्षणिक अभिवृत्ति* तथा *कार्य निष्पादन* के मध्य संबंधों का सांख्यिकीय परीक्षण किया गया। प्राप्त परिणामों के आधार पर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए:

1. जिन शिक्षकों की **शिक्षण क्षमता उच्च** पाई गई, उनका **कार्य निष्पादन स्तर भी अपेक्षाकृत उच्च** रहा। इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण दक्षता, कार्य निष्पादन का एक प्रमुख निर्धारक है।
2. **सकारात्मक शैक्षणिक अभिवृत्ति** रखने वाले शिक्षक न केवल बेहतर शिक्षण करते हैं, बल्कि वे विद्यार्थियों के साथ स्वस्थ संबंध स्थापित कर **बेहतर शैक्षिक परिणाम** प्राप्त करते हैं।
3. **शिक्षण क्षमता** और **शैक्षणिक अभिवृत्ति**, दोनों का **संयुक्त प्रभाव कार्य निष्पादन** पर परिलक्षित होता है, जो इस शोध का केन्द्रीय निष्कर्ष है।

### सुझाव (Suggestions)

उपरोक्त निष्कर्षों के आधार पर शिक्षा व्यवस्था में निम्न सुधारात्मक उपायों की अनुशंसा की जाती है:

- **शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों** में शिक्षण क्षमता और अभिवृत्तियों के *एकीकृत विकास* पर बल दिया जाना चाहिए, ताकि व्यवहारिक दक्षता के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का भी विकास हो सके।
- **पदोन्नति एवं मूल्यांकन प्रक्रिया** में केवल शैक्षणिक योग्यता नहीं, बल्कि *शिक्षण क्षमता एवं शैक्षणिक अभिवृत्ति* को भी *प्रमुख मूल्यांकन मापदंड* के रूप में सम्मिलित किया जाना चाहिए।
- विद्यालय स्तर पर **अभिप्रेरणा, परामर्श, एवं सतत फीडबैक** की व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे शिक्षक अपने पेशेवर विकास के लिए सजग और प्रतिबद्ध रह सकें।

## संदर्भ ग्रंथ सूची (References)


1. Anderson, L. (2004). *Teacher Competency and Educational Practice*.
2. Byrne, J. (1980). *Attitudes of Teachers and Learning Outcomes*.
3. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा **(NCF)** (2005), एनसीईआरटी, नई दिल्ली।
4. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा रूपरेखा **(NCFTE)** (2009), राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, भारत।
5. वर्मा, श्रद्धा (2023). *शिक्षक पेशेवर क्षमता पर नवाचार आधारित अध्ययन*, कलिंगा विश्वविद्यालय।
6. छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल रिपोर्ट (2022), रायपुर।